Dr. Madan Paswan, History.
Class: B.A. Part-II (Hons.) Paper-III
Topic: Saiyyed Dynasty.

Lecture. No. 13 (thirteen)
Date: 09.11.2020
Continue. Lecture...

लाहौर एवं सरहिन्द के शासक बहलोल खाँ लोदी थे, ने जो मालवा के महमूदशाह खिलजी के राजधानी तक बढ़ आने पर सुल्तान की सहायता करने आया था, शीघ्र दिल्ली पर अधिकार करने का प्रयत्न किया।

यद्यपि यह तत्काल निष्फल रहा, पर सैयदों की स्थिति कमजोर होती गई। जिसमें कहा कि –

(क) निजामुद्दीन अहमद के अनुसार, "राज्य के कार्य दिन-प्रतिदिन अधिक अव्यवस्थित होते गये और ऐसी अवस्था आ पहुँची कि दिल्ली से 20 कोस दूरी के भी सरदारों ने भी लड़खड़ाते हुए साम्राज्य की अधीनता अस्वीकार कर दी तथा इसके प्रतिकार की तैयारियों में लग गये।"

अलाउद्दीन शाह (1443-51 ई०)

1443 ई० में मुहम्मद शाह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र अलाउद्दीन आलम शाह की उपाधि से राज्य का शासक बना।

उसके राज्य में अब केवल दिल्ली शहर तथा आस-पास के गाँव बच गये थे।

उसने 1451 में दिल्ली का सिंहासन बहलोल लोदी को दिया एवं स्वयं बदायूँ चला गया।

अतः अलाउद्दीन शाह तक की स्थिति सैय्यद वंश की शासन प्रशासन की स्थिति मजबूत बनी रही। बाद में उत्तरोत्तर ही कमजोर होती गयी। इस प्रकार, सैय्यद वंश की स्थापना 1412 ई० में महमूद तुगलक की कैथल में मृत्यु हो जाने के बाद दौलत खाँ नाम के एक सरदार ने दिल्ली पर आधिपत्य जमा लिया। लेकिन 1414 ई० में खिज्र खाँ ने उसे पराजित कर मुल स्थिति को प्राप्त किया था।